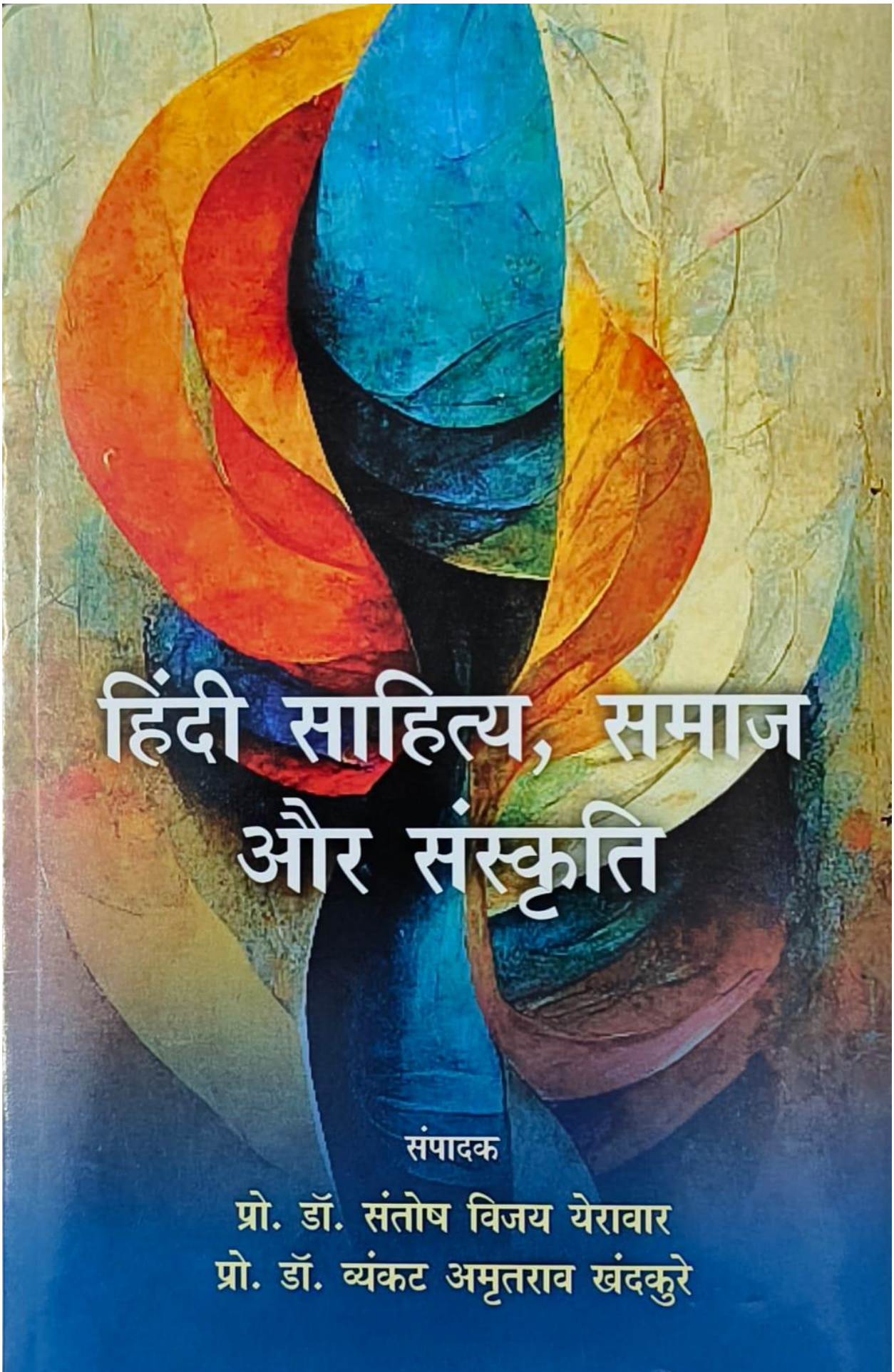

हिंदी साहित्य, समाज और संस्कृति

संपादक

प्रो. डॉ. संतोष विजय येरावार
प्रो. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

परिकल्पना

© संपादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 595

ISBN : 978-93-95104-13-5

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना,* के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110092
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

अनुक्रम

साहित्य और संस्कृति 13
—डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील

साहित्य में पर्यावरण चेतना : एक अध्ययन 20
—पूनम सिंह

हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना 26
—डॉ. सुनिता शिवशंकर बुंदेले

सामाजिक सरोकार और आधुनिक हिंदी काव्य साहित्य 31
—प्रा. डॉ. रणजीत जाधव/प्रा. महेबूब शरफोद्दीन मंगरूले

आंचलिक उपन्यास 'पानी के प्राचीर' 36
—डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे

उर्दू शायरी की विशाल परंपरा पर चर्चा 41
—प्रा. डॉ. जयराम सूर्यवंशी

विभाजन की त्रासदी की सशक्त अभिव्यक्ति 'तमस' 48
—प्रवीण प्रजापती

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में ममता कालिया का दौड़ उपन्यास 54
—प्रा. डॉ. गजानन वानखडे

संत साहित्य में समाज सुधार का स्वरूप 58
—प्रो. डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे

यात्रा-साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति 64
—प्रो. बालेश्वर राम

सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित जीवन की समस्याएँ 74
—नेहा देवी

समलैंगिक बनने की तात्विक पृष्ठभूमि 79
—डॉ. विरनाथ पांडुरंग हुमनाबादे

साहित्य और संस्कृति
(विशेष संदर्भ अमृतलाल नागर)

डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील
हिंदी विभागाध्यक्ष
राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

अमृतलाल नागर जो हिंदी के महान साहित्यकार हैं। अमृतलाल का जन्म गोकुलपूरा, आगरा में 1916 में हुआ। आपने मेघराज इन्द्र के शुरुआती लेखन, तस्लीमा लखनवी के नाम से व्यंग स्केच तथा निबंध अमृतलाल नागर के नाम से कहानियां तथा उपन्यास लिखे हैं। आपको हिंदी साहित्य अकादमी तथा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। अमृतलाल नागर जी ने साहित्य और संस्कृति के पक्षों को लेकर बहुत से लेख लिखे हैं। गंभीर प्रकार की गवेषणा यह नागर जी की विशेषता रही है। उनके ऐतिहासिक और पुरातात्विक विषयों के अध्ययन और अन्वेषण पर विशेष प्रकार की रुचि रही जहां पर उनकी एक नव दृष्टि दिखाई देती है उनके इन सभी लेखों को एक पुस्तक में एकत्रित किया गया है। उसी में से कुछ लेख साहित्य, साहित्यकार, संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं। राष्ट्रीय संकट और साहित्यकार इस लेख में अमृतलाल नागर जी की साहित्यकार के दायित्व के प्रति भूमिकाएं स्पष्ट होती हैं। वे कहते हैं कि, ''आदमी जब छोड़कर अपने आपको लांच करता है तो उस से बढ़कर लांच ना और कोई नहीं हो सकती।''[1] स्वयं अमृतलाल जी स्वयं के प्रति चिढ़े हुए हैं क्योंकि विगत तीन महीनों से उन्होंने कुछ लिखा नहीं है। नागर जी कहते हैं कि चीनी आक्रमण के बाद कोई ऐसी रचना पढ़ने में नहीं मिली जो दिल को छू जाए।

पहले महा युद्ध के समय लिखी गई उसने कहा था आज भी ताजा है नागर जी कहते हैं कि, ''मैंने भी अकाल महायुद्ध दंगों की पृष्ठभूमि पर लिखा है किंतु क्या बात है कि आजाद भारत पहले बाहरी आक्रमण से आहत है इतना बड़ा

धक्का लगा लेकिन किसी ने कुछ लिखा नहीं।'' राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों के बाद भारतीय जनता ने पहली बार साहित्यकारों को अपना दायित्व संभालने की अपील की नागर जी स्वयं से एक प्रश्न पूछते हैं ,कि क्या हम आलसी हो गए हैं या सुविधाओं के चक्कर में पड़ गए हैं या गिरते-गिरते झूठे हो गए हैं या मर चुके हैं। साहित्यकार के लिए लड़ाई यह बात सच से नहीं बल्कि 46 के अंतरिम सरकार दंगों से देश विभाजन के जमाने से ही आ गई हैं। नागर जी को इस बात का संतोष है कि आजाद भारत के बाद हिंदी साहित्य काफी समृद्ध हुआ है वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना गौरव बना चुका है किंतु मूल प्रश्न ज्यों का क्यों है चीनी आक्रमण के पश्चात जो साहित्य लिखा गया है उसमें क्रोध का दर्शन अधिक होता है चुनौतियां नहीं दिखाई देती रक्तदान प्राण दान इस प्रकार की नारेबाजी करने वाली कविताएं दिखाई देती है। नागर जी कहते हैं कि, ''आजाद भारत में राजनीतिक नेता और साहित्य के सपने प्रायः एक जैसे ही होते जा रहे हैं दोनों की शक्ति इस बार उन्हें साकार करने में एकजुट ना हो सकी क्यों? आजाद भारत में नेता सत्ताधारी की हैसियत बदली लेकिन साहित्यकार की हैसियत नहीं बदली नेता आर्थिक लाभ के एहसान लगने वाला बन गया और साहित्यकार उनके एहसानों की लादी धोने वाला धोबी बन गया जिनमें यह स्थिति न बने उन साहित्यकारों से नेता सदा फुट्टैल रहे।''[3]

अमृतलाल नागर जी के अनुसार समझदार नेता अपनी अंग्रेजी में अपना सबसे बड़ा नुकसान करते हैं कि उन्हें समाज के दिल को सही तरीके से समझने का मौका नहीं मिलता नासमझ नेता को गुटबाजी के अलावा कुछ पढ़ने लिखने का अवकाश ही नहीं मिलता। नागर जी उन नेताओं पर तंज कसते हुए नहीं चूकते हैं जिन्होंने चीनी आक्रमण के बाद फंड इकट्ठा करने का काम किया और उसके अलावा कुछ नहीं किया। हर मोहल्ला हर नगर में सुरक्षा समितियां बनाई गई लेकिन वहां पर साहित्य कार को स्थान नहीं है। तमाम अलग पार्टी उनकी भी समितियां बनाई गई। नागर जी के अनुसार साहित्यकार का असली दायित्व जनता के प्रति होता है। इस संपूर्ण लेख में अमृत लाल जी का राजनेताओं के प्रति आक्रोश नजर आता है जितना चीनी आक्रमणकारियों के प्रति हैं। उनका यह मानना है कि राजनेता अपना दायित्व भूल सकता है लेकिन साहित्यकार का यह दायित्व है कि वह जनसाधारण को हर प्रकार से प्रबुद्ध करता रहे। धर्म का मैथ्याडम्बर नष्ट करना यह साहित्य का धर्म है एक जागा हुआ राष्ट्र प्रतिकूल परिस्थितियों से भी शत्रु से जीत सकता है। अमृतलाल नागर जी का उत्खनन ऐतिहासिक दस्तावेजों के प्रति भी बहुत दिखाई देता है। उनकी कलम आदि कवि वाल्मीकि तथा सप्त ऋषि की संतानों पर भी चलती हैं, वे कहते हैं कि, ''तुलसी

हो या मीरा हो या सूफी हो या इसाई भक्त हो सभी अपने व्यक्त अव्यक्त परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में अपनी अहंता का चरम देती मानते हैं।''[4] वेदों में स्वयं से प्यार करने की बात अविद्या मानी गई है।

अमृत लाल जी ने धानुक, बंसफोड, वाल्मिकी, लालबेगी यह चार प्रकार की जानती आप बताई हैं। इनमें धानुक के चार उपवर्ग है, बैसिये, सतैसिपेय, जमानापारी और छोटी बैठक जो शहर में जाकर बस गया वह सतासियाँ हो गया, जो देहात में बस गया वह बैसिये बन गया सिर्फ हैसियत का भेद है बाकी प्रेम शादी ब्याह खाना पीना सब एक उसी प्रकार जमानापारी और छोटी बैठक में अंतर है।अमृतलाल नागर ने स्वयं इस विषय को स्वीकार किया है कि, ''एकदा नैमिषारण्य उपन्यास को लिखते समय यह बात उनके मन में आई थी कि कुछ ही लोगों के नाश्ते प्रदर्शन हेतु वाल्मीकि ने रावण रामायण रखी होगी, लेकिन यह भी अजीब बात है कि इन श्वपचों की छाया छूने तक से पाप लगता है लेकिन जन्म मरण के अवसर पर इनके बिना सवर्णों को गति नहीं मिलती। बसंफोड और वाल्मिकी और लालबेगी अलग अलग जातायाँ है उन्हें पारस्परिक खानपान या विवाह संबंध नहीं होते, बसंफोडी की बिरादरी छोटी है, यह लोग देहाती हैं बांस काटना इनका काम है उसमें डालिया, डोलची, पिंजरे बगैरे बनाते हैं।''

अमृतलाल नागर के अनुसार, ''वाल्मीकि बिरादरी वाले पहले तो मुसलमानी चाल चलन अपनाते थे, इनकी रस में अब हिंदूआनी हो गई हैं यह लोग महर्षि वाल्मीकि ऋषि को अपना गुरु मानते हैं और धानुक सुपच ऋषि को।''[6] लालबेगी खत्री, बनिये थे महत्त्व रूम के लड़के अब हाई स्कूल में जाने लगे हैं इ.. पास करने लगे हैं सरकारी विभागों में काम भी करने लगे हैं ईश्वर तबके के पास सबसे पहले आर्य समाज तथा गांधी ही तो पहुंचे थे, सुंदरलाल जी जो आर्य समाज हित है वह इन लोगों का इतिहास बताने लगे जब मोहम्मद गौरी ने सोमनाथ मंदिर पर चढ़ाई की तो पुजारियों ने कहा कि हमारे देवता की मूर्ति प्राचीन है इसे ना तोड़ो तो गौरी ने जवाब दिया मैं बुतशिकन हूं और मूर्ति तोड़ डाली और गौरी ने करोड़ों रुपए रखे आदि हमारे लोगों को पकड़कर अपने देश ले गया हमारी स्त्रियों को छीन लिया गया हमसे कहा गया कि अपने धर्म का त्याग करो लेकिन हमने कहा नहीं करेंगे तब वह बोला कि हम लोग जो मल मूत्र त्याग करते हैं तुम्हें उसे उठाना पड़ेगा तो हमने कहा उठाएंगे परंतु हमारे धर्म का त्याग नहीं करेंगे तब से यह मेहतर जमात इसी प्रकार का कार्य करती है। सवर्ण में हिंदू जिसे छूने के काबिल नहीं मानते हैं वेअपने हिंदुत्व के लिए स्वंय परम त्यागी को मानते हैं।

सुंदरलाल जी जो है वह अपनी जमात के लड़कों के बारे में उनकी शिक्षा के

बारे में बात करते हुए कहते हैं कि अब लड़के बी. ए, एडवोकेट हो रहे हैं इस पीढ़ी लड़कियां भी पढ़ रही है। इस समग्र लेख में अमृत लाल जी एक कथा का आधार लेते हैं इंदर चौधरी जो उनके परिचित व्यक्ति हैं वे उन्हें इस कथा के बारे में बताते हैं हम लोगों में एक बड़े महात्मा थे उनका नाम था सुपच ऋषि बेटे ने बड़े महात्मा थे कि वे पहुंचे बिना भगवान के दरबार में घंटे घड़ियाल नहीं बचते थे एक बार सब देवी देवता दरबार में पहुंचे मगर घंटा नहीं बचा तब भगवान ने कहा सुपच ऋषि नहीं आए हैं जब तक भी नहीं आएंगे घंटे घड़ियाल नहीं बचेंगे उन्हें बुलाकर लाओ तब एक आदमी उन्हें बुलाने गया तो वे ध्यान में लीन थे उन्होंने कहा हमारे पास समय नहीं है। इस उत्तर से भगवान नाराज हो गए और उन्होंने कहा कि सुपच ऋषि को बल के आधार पर उठाकर लेकर आओ जब भगवान के लोग सुपच ऋषि के पास गए तो उन्होंने हंसकर जवाब दिया पहले हमारी माला को तो उठाओ और फिर हमें ले जाने की कोशिश करो और उन्होंने गले की माला उतार कर फेंक दी लोगों ने बहुत जोर लगाया उस माला का एक मणि भी टस से मस न हुआ तब भी लोग सुपर सी के पैर गिरगिराने लगे सुपच ऋषि गए और घंटे घड़ियाल बजने शुरू और यज्ञ पूरा हुआ, उस यज्ञ में छीता महारानी के हाथ की रसोई बनाई गई थी किंतु सुपच ऋषि ने उस खाने को खाते समय उसमें नुक्स निकाला था भगवान ने कहा कि सुपच बहुत ऊंचे दर्जे के ऋषि हैं उनकी बात की जांच करो जब रसोई में जाकर जांच की गई तब सुपच उसी की बात ठीक निकली। दरबार में जो पंडे वंडे थे वें सुपच ऋषि से जलने लगे उनकी कथा को हम नहीं लिखेंगे हम दबा देंगे उनसे यह तक कहा गया कि अगर तुम महात्मा हो तो मैला उठाओ सुपच हंसे और सब का मेला उठाने लगे सबसे दुनिया भर के उनके जितने चेले थे उन्होंने यह कहना शुरू किया कि हमारे गुरु का नेम पालते हैं।

अमृतलाल नागर जी ने मिर्जा गालिब को लेकर भी एक लेख लिखा है, मिर्जा गालिब और गदर इस लेख में वे मिर्जा गालिब के व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को उजागर करते हैं। अमृतलाल नागर जी का यह मानना है, ''आमतौर पर यह माना जाता है कि किसी देश में क्रांति के अवसर पर कवि और कलाकार प्रबल प्रेरक शक्ति के रूप में काम करते हैं।''[7] मिर्जा गालिब बहादुर शाह जफर की दरबार में रहकर भी क्रांति की वैसी पर रख सकती ना बन पाए जैसी उनकी आशा थी गदर की जिस दौर में छोटे-मोटे कवि अपनी जोशीली कविताएं लिख रहे थे वहीं पर महाकवि गालिब मौन थे। इतिहासकार डॉ. सैयद अतहर अब्बास रिजवी ने एक पुस्तक लिखी 'स्वतंत्र दिल्ली' इस पुस्तक में उन्होंने गालिब द्वारा लिखा गया दस्तमबो का उल्लेख किया है मगर यह उल्लेख बहुत सकारात्मक नहीं है कई सारे

कवियों और लेखकों ने गालिब को कायर मौकापरस्त कहां है डॉ कुंवर मोहम्मद अशरफ ने लोगों की इस तीखी आलोचना से दुखी होकर गालिब के पक्ष में एक लेख लिखा था रिवोलियन 1857 : अ सिम्पोजियम इस पुस्तक में हाल के क्रांतिकारी दृष्टिकोण को रखा गया है, ऊदो हिंदी इस संकलन में जुड़ा हुआ एक खत गालिब ने लिखा है।''[7] ''मई को जब दिल्ली में विद्रोह का उदय हुआ तू अपने घर के दरवाजे बंद करके बैठे रहे।''[8] उस जमाने में दिल्ली में मलाना फजले हक खैराबादी एक मिसाल के रूप में सामने थे क्रांति का नेतृत्व करके उन्होंने अंग्रेजों से काला पानी की सजा पाई वही उन्हें शहादत भी प्राप्त हुई 1871 में अंग्रेजों के राज में गालीब को अपनी पेंशन समाप्त होने का भय था इसलिए गालिब ने इस पुस्तक में से कुछ महत्त्वपूर्ण अंश निकाल दिए थे ।

अमृतलाल नागर जी ने मिर्जा गालिब को लेकर भी एक लेख लिखा है, मिर्जा गालिब और गदर इस लेख में वे मिर्जा गालिब के व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को उजागर करते हैं। अमृतलाल नागर जी का यह मानना है, ''आमतौर पर यह माना जाता है कि किसी देश में क्रांति के अवसर पर कवि और कलाकार प्रबल प्रेरक शक्ति के रूप में काम करते हैं।'' मिर्जा गालिब बहादुर शाह जफर की दरबार में रहकर भी क्रांति की वैसी पर रख सकती ना बन पाए जैसी उनकी आशा थी गदर की जिस दौर में छोटे-मोटे कवि अपनी जोशीली कविताएं लिख रहे थे वहीं पर महाकवि गालिब मौन थे। इतिहासकार डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी ने एक पुस्तक लिखी 'स्वतंत्र दिल्ली' इस पुस्तक में उन्होंने गालिब द्वारा लिखा गया दस्तमबो का उल्लेख किया है मगर यह उल्लेख बहुत सकारात्मक नहीं है कई सारे कवियों और लेखकों ने गालिब को कायर मौकापरस्त कहां है डॉ. कुंवर मोहम्मद अशरफ ने लोगों की इस तीखी आलोचना से दुखी होकर गालिब के पक्ष में एक लेख लिखा था रिवोलियन 1857 : अ सिम्पोजियम इस पुस्तक में हाल के क्रांतिकारी दृष्टिकोण को रखा गया है, ऊदो हिंदी इस संकलन में जुड़ा हुआ एक खत गालिब ने लिखा है।'' 11 मई को जब दिल्ली में विद्रोह का उदय हुआ तू अपने घर के दरवाजे बंद करके बैठे रहे। उस जमाने में दिल्ली में मलाना फजले हक खैराबादी एक मिसाल के रूप में सामने थे क्रांति का नेतृत्व करके उन्होंने अंग्रेजों से काला पानी की सजा पाई वही उन्हें शहादत भी प्राप्त हुई 1871 में अंग्रेजों के राज में गालीब को अपनी पेंशन समाप्त होने का भय था इसलिए गालिब ने इस पुस्तक में से कुछ महत्त्वपूर्ण अंश निकाल दिए थे ।

कवियों की बिरादरी में गालिब जैसा शराबी, परस्त्री प्रेमी, कर्ज ने पुर पुर डूबे रहने वाले, जुआरी, चरित्रहीन आवारा एक नहीं अनेक सभ्यता के अलम्बदारों ने

अब तक ऐसे आवारा चरित्रहीन उनको इतना मान सम्मान देने से रोक क्यों नहीं लगा दी? कवि कलाकार तुल के अंत सौंदर्य सत्य चेतना के लिए पूजते हैं? या उनके बाहरी अभावों याकूब भावों के लिए? अमृतलाल नागर यह मानते हैं कि आलोचकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि कवि कलाकार अभाव की उपज है गालिब ने अपने आपको भी निकम्मा बादाख्वार जैसे कलंकित विशेषज्ञों से विभूषित किया है। अमृत राय ने फ्रेंड्स उपन्यासकार बाल्जक का उदाहरण देते हुए इस बात को बताया है कि बाल्जक रात भर लिखता था, दिन भर सोता था और शाम को घंटा समाज में अपने आप को रईस-ए-आजम की तरह पेश करता था वह जिन जिन लोगों से कर्जा लेता था कर उनसे से बचने के लिए घर बदलता हुआ फिरा करता था। दुनिया की नजर में वह एक निकम्मा और आवारा आदमी था। वह खुद भी अपनी चरित्र की नीचता को जानता था लेकिन वह लिखने के लिए जीता था लिखने से उसे जीवन दृष्टि मिलती थी अमृतलाल नागर जी भी मानते हैं कि गालिब लिखने के लिए जीते हैं उन्हीं भी अपनी जीवन दृष्टि वहीं से मिलती है। अमृतराय यहां पर माइक एंजेलो का भी उदाहरण देते हैं अरविंद घोष का भी उदाहरण देते हैं अरविंद घोष एकदम कवि लेखक महान विचारक राष्ट्र कर्मी थे अचानक वे राजनीति छोड़कर योग में चले गए, कहने वालों ने कहा कि अरविंद घोष कायर थे एस्केप करके गए मगर अरविंद को जीवन दृष्टि वहां नहीं मिली। अमृतलाल नागर का यह मानना है कि, ''गालिब जब उनके दोस्त सरपरस्त बहादुर शाह पर जबान चाहिए दिल्ली में क्रांति का सूर्य क्षमता तो वे अपने घर के दरवाजे बंद करके बैठे थे कोई उन्हें कायर कहना चाहे तो कहे लेकिन मेरी यह विनम्र समझ है कि ऐसा समझना अन्याय है असद्उल्ला खां ने अपने घर के दरवाजे असद्उल्ला खां ने अपने घर के दरवाजे उसी दिन बंद कर लिए थे जिस दिन वह गालिब बने। बाहर के पट बंद किए बिना अंदर के पट में ही खुलते, अपने निकम्मे पन का सारा अपमान सहने के लिए उनकी अहंता ने बादाखोशी की किलेबंदी की थी, वे अपनी पीड़ा को लेकर अकेले तटस्थ और शांत होकर अपनी जीवन दृष्टि का विस्तार कर रहे थे।'' अमृतलाल कहते हैं कि मिर्जा गालिब अपने घर के दरवाजे बंद किए हुए जरूर बैठे थे मगर उनकी आत्मा की सारी खिड़कियां और दरवाजे खुले थे। उस समय भी ऐसा नहीं है कि गालिब क्रांति विरोधी थे नहीं मान विरोधी। फरवरी 1857 को अवध के गुलाम हुसैन बिलग्रामी साहब को लिखे गए एक पत्रा में उन्होंने अवध की हालत पर दुख प्रकट किया था अमृतलाल अंत में यह कहते हैं कि कौन कहता है कि, ''गालिब जीवन से भागने वाले कायर थे भगवान बुद्ध ने जो उपदेश दिया था अप्प दीपो भव अपना दीपक स्वयं बनो

गालिब जैसे महाकवि खुद अपने आप को दिया बनाकर इस तरह से जला डालते हैं कि अपने आप तो जल जाते हैं मगर सारी दुनिया में उजाला कर जाते हैं।''

संदर्भ

1. साहित्य और संस्कृति, अमृतलाल नागर, पृ. 107
2. वही, पृ. 108
3. वही, पृ. 108
4. वही, पृ. 171
5. वही, पृ. 170
6. वही, पृ. 173
7. वही, पृ. 174
8. वही, पृ. 191
9. वही, पृ. 190
10. वही, पृ. 193